7

दाऊद

ईश्वरीय मन के अन्दर की एक झलक

''प्रसिद्धि'' तथा ''समृद्धि'' इनसान की दो बड़ी इच्छाएं होती हैं। इतिहास के पन्नों पर अपनी पहचान बनाने के व्यर्थ प्रयास में कई जानें यूं ही बर्बाद कर दी गईं।

सिकन्दर महान ने डियोजीन्ज़ से कुछ सवालों के जवाब पूछे और बदले में उसकी मुंह मांगी मुराद पूरी करने के लिए कहा। दार्शनिक ने अनश्वरता का छोटे से छोटा अंश मांग लिया। ''यह गिज़्ट मैं नहीं दे सकता,'' सिकन्दर ने कहा। डियोजीन्ज़ ने पूछा, ''तो फिर यह जानते हुए भी कि सिकन्दर एक पल का आनन्द अपने आप को देने का आश्वासन नहीं दे सकता, संसार पर विजय पाने के लिए इतने कष्ट ज़्यों उठाता है ?'' सिकन्दर चाहता था कि उसे याद रखा जाए; वह सदा तक प्रसिद्ध होने का आनन्द पाना चाहता था। आज बहुत से लोगों की यही इच्छा है।

सदा के लिए प्रसिद्ध होने का आनन्द पाने वाला यिशै का पुत्र दाऊद है। उसकी प्रसिद्धि संसार द्वारा प्रिय समझे जाने वाले बहुत से गुणों पर आधारित हो सकती है (16:18)। परन्तु दाऊद की प्रसिद्धि तथा समृद्धि के लिए उसका एक ही गुण काफ़ी था। दाऊद सदा के लिए इसलिए प्रसिद्ध है ज़्योंकि उसका मन ईश्वरीय था! पहला शमूएल 13:14 कहता है कि दाऊद परमेश्वर ''के मन के अनुसार एक पुरुष'' था।

दाऊद के ईश्वरीय मन पर ध्यान दें जिसने इस जवान चरवाहे को गिने चुने लोगों की कतार में खड़ा कर दिया। 13:14 के शज़्द उस समय कहे गए थे जब दाऊद काफ़ी छोटा था। उसने तेईस से तीस वर्ष की आयु में राज करना आरज़्भ किया; इसलिए यह वाज़्य शाऊल के शासन की समाप्ति से दस से पन्द्रह वर्ष पहले कहा गया होगा। ये शज़्द केवल प्रेरितों 13:22 में मिलते हैं। शमूएल द्वारा कहे गए ये शज़्द शाऊल के स्वभाव से भिन्नता करने के लिए पाठक के लिए उपलज़्ध हैं। यद्यपि दाऊद सिद्ध नहीं था, विशेषतया बाद के वयस्क वर्षों में, परन्तु उसका व्यवहार परमेश्वर की खोज करने वाला ही था। यही ''मन'' हमारा ध्यान खींचता है। यह बहुमूल्य गुण के मोतियों से तैयार हुआ है।

ईश्वरीय मन की शहनशाही

दाऊद दबे कुचले लोगों के प्रति चिंतित रहता था (23:5)। शाऊल के द्वेष ने दाऊद को भगौड़े का जीवन बिताने के लिए विवश कर दिया था। ''भागते-भागते'' दाऊद ने एक सेना गठित कर ली और स्वतन्त्र न्याय दिलाने वाला बन गया थी। 1 शमूएल 23 में उसने

एक इस्राएली सीमावर्ती नगर के बारे में सुना जिसके लोगों को पलिश्तियों द्वारा तंग किया जा रहा था। शाऊल चाहे हाथ धो कर दाऊद के पीछे पड़ा हुआ था, परन्तु उन लोगों की सहायता करने से वह उसे रोक न पाया।

यह एक भला कार्य था। यदि दाऊद का मन दूसरे बहुत से लोगों की तरह होता, तो वह बदला लेने की इच्छा रखता जिससे आक्रमण में उसे आनन्द मिलता ज़्योंकि इससे राजा के रूप में शाऊल की क्षमता का पता चल जाना था। परन्तु अपने दबे कुचले भाइयों के लिए दाऊद के लगाव ने उसे उनकी सहायता करने के लिए विवश किया। ईश्वरीय मन दूसरों की सेवा करने की इच्छा से अपने लिए कोई रुचि नहीं रखता (तु. फिलिप्पियों 2:3, 4; 1 कुरिन्थियों 10:24; 12:25-27)। दबे कुचले लोगों के प्रति यह लगाव परमेश्वर के अपने मन में आया था (भजन संहिता 86:5, 13, 15, 16; याकूब 5:11)।

दाऊद शत्रुओं के प्रति दयालु था (24:5, 10, 19)। शाऊल का प्राण उसके हाथ में था। उसके केवल एक इशारे पर शाऊल मर गया होता। परन्तु दाऊद ने उसे मारना न चाहा ज़्योंकि उसने अपने सबसे बड़े शत्रु पर दया दिखाने का निश्चय कर रखा था!

दया करने से बढ़कर परमेश्वर के मन का और बड़ा गुण ज़्या है? (तु. तीतुस 3:3-7; इफिसियों 2:4, 5.) दया पर ध्यान केन्द्रित करके और इसे अपने मनों में जगह देकर हम अच्छा करेंगे। इंग्लैंड के एक अमीर की कहानी है जिसे बहुत गुस्सा आता था। उसने इसका इलाज मसीह का अध्ययन करके किया था। घावों तथा अपमानित होने के बावजूद हमारे प्रभु के धैर्य से उस अमीर को काफ़ी सोचने का अवसर मिला था। जब भी वह क्रोध करने की परीक्षा में पड़ता तो मसीह का ध्यान कर लेता था। जल्द ही उसका मन मसीह के दयालु मन में बदल गया था!

अपने सताने वालों के प्रति दाऊद विवेकी था (25:23से)। दाऊद अपने कोमल हृदय के कारण अबीगैल की बात समझ पाया था। वह एक विवेकी व्यक्ति था जिस कारण दूसरों को हानि पहुंचाने वाली गलती नहीं करता था (तु. 25:32-35)।

विवेकी होना हमारे महान परमेश्वर का विशेष गुण है। दण्ड देने में कभी उतावलापन न दिखाना, हमारा परमेश्वर अपने निर्णय हमेशा विवेक से लेता है (उत्पत्ति 6:3; 1 पतरस 3:20)। ऐसे विवेक का कई बार वे लोग दुरुपयोग करते हैं जिनकी सहायता परमेश्वर करना चाहता है (नहेमायाह 9:28-31)। बहुत से लोगों में ईश्वरीय मन का यह गुण नहीं होता है। हम न्याय के मामलों तथा दूसरों का न्याय करने में बहुत ही बेचैन होते हैं।

दाऊद ने बुराई के प्रति सामर्थ तथा अतिघृणा दिखाई (17:32से)। गत वासी दानव को इसलिए मारा गया था ज़्योंकि उसका मन बुराई से भरपूर था। दाऊद ने गोलियत के सामने खड़े होकर दृढ़ता से परमेश्वर में अपनी सामर्थ का ऐलान किया (17:45, 50क)। परमेश्वर जैसा मन रखने वाले सभी लोग बुराई को ज़रा भी सहन नहीं कर सकते हैं (नहूम 1:6)। सामर्थ का ईश्वरीय मन रखने वाला विश्वासी अपने और पाप में एक रेखा खींच लेता है और उसे कभी पार न करने की कोशिश करता ज़्योंकि उसके अन्दर बुराई के निमित्त परमेश्वर की घृणा है (तु. रोमियों 6:1ख-2क; इफिसियों 5:7-11; 1 थिस्सलुनीकियों 4:4)।

दाऊद ने क्षमा दिखाई (26:21)। दाऊद को शाऊल को मारने का यह दूसरा अवसर था। पहला अवसर कई साल पहले मिला था (24:2), परन्तु शाऊल की प्रतिज्ञा पूरी नहीं की गई थी। दाऊद के सिर की कीमत आज भी लगी हुई थी जिसके लिए शाऊल ही जिज़्मेदार था! 26:21 में मिलने वाली शाऊल की क्षमा याचना को दाऊद ने गंभीरता से नहीं लिया था ज़्योंकि शाऊल द्वारा उसे महल में वापस आने का निमन्त्रण मिलने के बाद भी वह अपनी राह चला गया था।

हमें ऐसा मन बनाना चाहिए जिसमें क्षमा करने का स्थान हो (मज़ी 18:35; 6:12; कुलुस्सियों 3:13)। हमारे मन परमेश्वर के मन जैसे होने चाहिए, जो प्रेम तथा उसमें पाई जाने वाली क्षमा से उमड़ रहा है (होशै 6:1, 2; योना 4:2)।

दाऊद ने अधिकार के प्रति सज़्मान दिखाया (29:9, 10)। यद्यपि शाऊल मारे जाने के योग्य था, परन्तु दाऊद ने अधिकार के पद को जो उसे परमेश्वर की ओर से मिला था, सज़्मान दिया। अपने सारे व्यवहार में दाऊद ने माना कि शाऊल इस्राएल का राजा है। दाऊद ने कभी भी परमेश्वर के नियमों को बदलने का प्रयास नहीं किया, और उसके व्यवहार से परमेश्वर की इच्छा पूरी हुई।

ईश्वरीय मन परमेश्वर के नियमों का पालन करने की धुन में रहते हैं। ईश्वरीय मन परमेश्वर के नियमों से मेल खाएंगे, उनमें कभी सुधार की इच्छा नहीं करेंगे और न ही उन्हें नकारेंगे (एज्रा 7:10)।

किसी ने कहा है, ''इनसान का मन जलती रहने वाली झाड़ी है। यदि आप इसे परमेश्वर के प्रेम के विचारों से जलता रखते हैं, तो इसमें से परमेश्वर तथा मनुष्य दोनों के लिए प्रेम की एक लाट निकलेगी। परन्तु यदि आप इसे अपने प्रेम के विचारों से जलाए रखते हैं तो इस पर गंदा धुआं, बदबू तथा अंधेरा छा जाएगा।''

ईश्वरीय मन के परिणाम

जब किसी का मन ऊपर लिखे गुणों से तैयार होता है तो उसके जीवन को नीचे लिखे परिणामों से आशीष मिलती है।

उसका परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा तथा विश्वास होगा। शाऊल को अपनी शज़्ति पर घमण्ड था जिस कारण वह असफल हो गया था। दाऊद ने हर बात में परमेश्वर पर भरोसा रखा और वह सफल हुआ (17:5-47; भजन संहिता 115:3; 135:6)।

इग्लैंड के राजा एडवर्ड प्रथम (1239-1307) की पवित्र स्थान देखने की बड़ी इच्छा थी। परन्तु अपने देश की परिस्थितियों के कारण वह वहां जीते जी न जा सका। उसने अपने पुत्र को स्पष्ट निर्देश दिया कि उसकी मृत्यु के बाद वह अपने पिता का हृदय वहां ले जाए। इसके लिए एडवर्ड ने 32,000 पौंड अलग रखे और 140 योद्धाओं को वहां जाने का आदेश दिया। इसी प्रकार, मसीही लोगों के ईश्वरीय मन स्वर्ग में लगे हैं यद्यपि वे अभी अपने अनन्त निवास में पहुंचे नहीं हैं।

दाऊद के लिए क्षमा थी। जब शमूएल ने शाऊल का सामना किया तो राजा भयभीत

नहीं हुआ। शाऊल का अपनी गलती मानना सच्चे मन से नहीं था। नातान के दाऊद के पास जाकर उसकी गलती बताने में कितना फर्क है। भजन संहिता 51 के शब्दों में दिखाए गए शोक से बढ़कर स्पष्ट और कहीं नहीं मिलता।

''परमेश्वर का हृदय'' रखने वाले लोग पाप की भयंकर असफलता को जानते हैं और परमेश्वर की भरपूर क्षमा में आनन्दित होते हैं (भजन संहिता 38:3, 18; 1 यूहन्ना 1:7, 9; इब्रानियों 8:12)।

दाऊद ने परमेश्वर के प्रति श्रद्धा तथा समर्पण की एक विरासत भी छोड़ी है। बेशक दाऊद को मरे सदियां बीत चुकी हैं, परन्तु आज भी उसका ईश्वरीय मन जीवित है (प्रेरितों 13:22)। हाबिल की तरह ईश्वरीय मन वाले लोग हमेशा बातें करते रहेंगे (इब्रानियों 11:4ख)।

सारांश

दाऊद द्वारा दिखाए गए ईश्वरीय मन के गुण हमारे महान परमेश्वर में भी मिलते हैं: वह सब दबे कुचलों की चिंता करता है; उसकी दया सब लोगों के लिए है; वह बुराई से घृणा करता है और इसे सहन नहीं कर सकता; वह न्याय करने वाला तथा धीरज रखने वाला है; वह तुरन्त क्षमा देता है ताकि सब पाप मिट जाएं; उसे अधिकार है और अंत के दिन वह हमारा न्याय करेगा।

यहूदियों के एक महान गुरु ने अपने विद्वानों को विचार करके यह बताने के लिए कहा कि उसे उचित ठहरने के लिए ज़्या करना चाहिए। एक ने आकर कहा कि *अलविदा* कहने से अच्छा कुछ नहीं है। एक और ने *अच्छा साथी* कहा। तीसरे ने *अच्छा पड़ोसी* कहा और चौथे ने सुझाव दिया *बुद्धि।* अंत में एक ने आकर कहा, *अच्छा हृदय* सबसे अच्छा है। प्रभु ने उज़र दिया, ''सही है, तुम ने उस बात को जो सबने कही है, दो ही शब्दों में समझ लिया है। ज़्योंकि जिसका मन अच्छा होगा वह संतुष्ट, अच्छा साथी, अच्छा पड़ोसी होगा और आसानी से देख लेगा कि उसके लिए ज़्या करना उचित है।'' यिशै के पुत्र दाऊद की ऐसी ही सलाह है: मन अच्छा होना चाहिए!